Shikshan Sanshodhan : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences ISSN(o): 2581-6241
Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal Impact Factor: 6.471
Volume - 6, Issue - 1, January - 2023 Publication Date: 20/01/2023

DOIs:10.2018/SS/202301007 --:-- Research Paper / Article

उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के नियंत्रण अवस्थान का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन

[1] डॉ. श्रीमती आरती मिश्रा
सहायक प्राध्यापक - शिक्षा
कल्याण स्नातकोत्तर महाविद्यालय, भिलाई, छ.ग
ईमेल - artimishra19a@gmail.com

[2] अर्चना त्रिपाठी
सहायक प्राध्यापक - शिक्षा
एम जे महाविद्यालय, भिलाई, छ.ग.
ईमेल - archanavin2226@gmail.com

शोध सार - " शिक्षा का उद्देश्य है कि जीवन को अंधेरे से उजाले की ओर ले जाना।"

शिक्षा का उद्देश्य मात्र ज्ञान प्राप्त करना ही नहीं अपितु उस पर अमल करना भी है शिक्षा प्राप्ति के पश्चात विद्यार्थियों के व्यवहार में परिवर्तन को शैक्षिक उपलब्धि के द्वारा ज्ञात किया जाता है । प्रस्तुत अध्ययन विद्यार्थियों के नियंत्रण अवस्थान का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव को बताता है। अध्ययन के लिए शोधकर्ता द्वारा दुर्ग जिले में संचालित ग्रामीण क्षेत्र के शासकीय उच्चतर माध्यमिक शाला का चयन किया गया एवं कक्षा 11 के 120 विद्यार्थियों का चयन देव निर्देशन विधि द्वारा किया गया तत्पश्चात शैक्षिक उपलब्धि को ज्ञात करने के लिए विद्यार्थियों की पूर्व कक्षा के परिणामों को लिया गया तथा श्री संजय बोहरा द्वारा निर्मित नियंत्रण अवस्थान मापनी उपकरण के द्वारा आंकड़े संग्रहित किए गए तथा सांख्यिकी विवेचना के द्वारा मध्यमान ,प्रमाणिक विचलन तथा टी टेस्ट निकाला गया। इस अध्ययन से यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि उच्च नियंत्रण अवस्थान वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि उच्च होती है तथा निम्न नियंत्रण अवस्थान वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि परस्पर निम्न होती है । यह अध्ययन विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को बढ़ाने में सहयोग प्रदान करेगा एवं विद्यार्थियों को किसी भी प्रकार की परिस्थिति से निपटने के लिए तैयार करेगा।

मुख्य शब्द : नियंत्रण अवस्थान, शैक्षिक उपलब्धि, उच्चतर माध्यमिक विद्यालय , नियंत्रण अवस्थान मापनी ।

1. प्रस्तावना:

मनुष्य में अंतर्निहित पूर्णता की अभिव्यक्ति ही शिक्षा है शिक्षा द्वारा बालक अपने जीवन के चरम लक्ष्य की प्राप्ति करता है बालक के जीवन में शिक्षा जीवन पर्यंत चलती रहती है। शिक्षा बालक के विकास को प्रभावित करती है, जिसके द्वारा बालक अपने व्यक्तित्व का निर्माण करता है । बालक के व्यक्तित्व निर्माण में बाल मनोविज्ञान का विशेष स्थान होता है, मनोविज्ञान की दृष्टि से बालक की उपलब्धि में माता-पिता,शिक्षक, विद्यालय एवं वातावरण इन सभी का विशेष योगदान होता है । इसके साथ ही बालक के स्वयं का व्यवहार उसे सबसे ज्यादा प्रभावित करता है , बालक का किसी घटना या विषय पर सोचने का नजरिया बालक के व्यवहार को प्रदर्शित करता है और यही बालक का बिंदुपथ नियंत्रण अथवा नियंत्रण अवस्थान कहलाता है। जो बालक की उपलब्धि को प्रभावित करता है। **रोटर (1966)** ने मूल रूप से नियंत्रण अवस्थान की मनोवैज्ञानिक तौर से व्यक्तित्व के एक तत्व के रूप में रचना की है नियंत्रण अबस्थान परिणाम के ज्ञान के रूप में जाना जाता है जिसके द्वारा व्यक्ति अपने जीवन की घटनाओं को नियंत्रित करता है। **रोटर (1975)** ने यह बताया कि आंतरिक एवं बाह्य नियंत्रण अवस्थान एक सतत प्रक्रिया के दोनों चरों को प्रदर्शित करते हैं ।आंतरिक नियंत्रण अवस्थान में किसी भी घटना के परिणाम व्यक्ति के हाथों में होता है जबकि बाह्य नियंत्रण अवस्थान में परिणाम बाह्य परिस्थितियों पर निर्भर करता है।

प्रस्तुत शोध में शोधार्थी द्वारा विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि पर उनके नियंत्रण अवस्थान के प्रभाव का अध्ययन किया जाएगा।

2. संबंधित शोध अध्ययन :

राना ओजोन कुटेनिस 2011 ने अधिगम प्रदर्शन पर नियंत्रण अवस्थान के प्रभाव का अध्ययन किया एवं पाया कि आंतरिक नियंत्रण अवस्थान वाले विद्यार्थी के सीखने का प्रदर्शन उच्च है एवं वे सीखने की प्रक्रिया के दौरान अधिक सक्रिय एवं प्रभावी हैं दूसरी

ओर बाहरी नियंत्रण अवस्थान वाले विद्यार्थी इस अवधि के दौरान अधिक निष्क्रिय और अप्रतिक्रियाशील पाएं गए साथ ही विद्यार्थियों के जनसांख्यिकीय समूह एवं उनके सीखने के कार्यों में भी कुछ अंतर पाया गया।

प्रतिमा दास एवं पटनायक 2013 ने किशोरों के आत्मसम्मान, नियंत्रण अवस्थान एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य संबंध पर अध्ययन किया ।अध्ययन का उद्देश्य किशोरों की शैक्षिक उपलब्धि पर आत्म सम्मान एवं नियंत्रण अवस्थान के प्रभाव का अध्ययन करना है । परिणाम में पाया गया कि किशोरों की शैक्षिक उपलब्धि पर नियंत्रण अवस्थान एवं आत्म सम्मान सार्थक रूप से प्रभाव डालते हैं। इस अध्ययन में दोनों लिंगों के कुल 120 किशोर छात्रों का चयन किया गया ।

अली अहमद 2018 में शैक्षिक उपलब्धि पर नियंत्रण अवस्थान व समय प्रबंधन के प्रभाव का अध्ययन किया ।इस अध्ययन में बांग्लादेश के उच्च माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों का चयन यादृच्छिक चयन विधि द्वारा किया गया तथा निष्कर्ष में नियंत्रण अवस्थान व समय प्रबंधन का शैक्षिक उपलब्धि पर सकारात्मक प्रभाव पाया गया।

हारूकावा एवं अन्य 2012 ने नियंत्रण अवस्थान, मेटाकॉग्निशन और अकादमिक सफलता के मध्य संबंध पर अध्ययन किया । इस अध्ययन में नियंत्रण अवस्थान एवं शैक्षिक उपलब्धि के संबंध को ज्ञात करने हेतु 282 विद्यार्थियों का चयन किया गया तथा सांख्यिकी विश्लेषण से मध्यमान और प्रतिगमन विश्लेषण के माध्यम से अध्ययन के परिणाम यह दर्शाते हैं कि विद्यार्थियों की अकादमिक सफलता पर नियंत्रण अवस्थान का सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। निष्कर्ष में यह भी पाया गया कि जो विद्यार्थी अपनी सफलता या असफलता के लिए स्वयं को जिम्मेदार मानते हैं वे अकादमिक सफलता अधिक अर्जित करते हैं।

3. शोध विधि - शोध विधि प्रस्तुत शोध में शोधकर्ता ने सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया है।
उपकरण - प्रस्तुत शोध में शोधकर्ता ने चयनित न्यादर्श पर नियंत्रण अवस्थान मापन हेतु संजय वोहरा द्वारा निर्मित **नियंत्रण अवस्थान मापनी** उपकरण का प्रयोग किया है।
न्यादर्श - प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्ता द्वारा न्यादर्श हेतु दुर्ग जिले के ग्रामीण क्षेत्र में संचालित शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय खपरी एवं खम्हरिया के 120 छात्र-छात्राओं का चयन दैव निर्देशन विधि द्वारा किया गया है।

परिसीमन

- यह अध्ययन कक्षा 11वीं के विद्यार्थियों तक सीमित है।
- यह अध्ययन दुर्ग जिले के अंतर्गत संचालित ग्रामीण शासकीय विद्यालय खपरी एवं खम्हरिया तक सीमित है।
- यह अध्ययन दुर्ग जिले के अंतर्गत संचालित शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय खपरी एवं खम्हरिया के छात्र छात्राओं तक सीमित है।
- यह अध्ययन कक्षा 11वीं के विद्यार्थियों के पूर्व वर्ष दसवीं के प्राप्तांको के अध्ययन तक सीमित है।

शोध का उद्देश्य -

- उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के नियंत्रण अवस्थान का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन करना।

परिकल्पना

- Ho उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के नियंत्रण अवस्थान का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव नहीं पाया जाएगा।

प्रदत्तों का विश्लेषण , परिणाम एवं व्याख्या -

उपर्युक्त परिकल्पना को सत्यापित करने के लिए शासकीय विद्यालय के कक्षा ग्यारहवीं के छात्रों के द्वारा नियंत्रण अवस्थाएं मापनी से प्प्राप्त आंकड़ों को उच्च एवं निम्न स्तर पर विभाजित किया गया जिसे निम्न तालिका द्वारा प्रदर्शित किया गया है।

तालिका क्रमांक - 01

क्रमांक	समूह	न्यादर्श संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	टी टेस्ट का मान
1	उच्च नियंत्रण अवस्थान	40	56.45	17.165	**2.69**
2	निम्न नियंत्रण अवस्थान	40	47.5	12.05	

स्वतंत्रता की कोटी df - 78

उपर्युक्त सारणी से यह स्पष्ट होता है कि उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में उच्च नियंत्रण अवस्थान वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान 56.45 , प्रमाणिक विचलन 17.1 65 प्राप्त हुआ तथा निम्न नियंत्रण अवस्थान वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान 47.5 व प्रमाणिक विचलन 12.05 प्राप्त हुआ। जो स्वतंत्रता की कोटि 78 के लिए 0.01 सार्थकता स्तर पर सार्थक अंतर है।

इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि दुर्ग जिले में संचालित शासकीय उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के नियंत्रण अवस्थान का उनके शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक अंतर पाया जाता है । अतः परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है।

इस अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष अली अहमद 2018 के अध्ययन से समानता रखते हैं अली अहमद ने अपने अध्ययन में शैक्षिक उपलब्धि पर नियंत्रण अवस्थान व समय प्रबंधन के प्रभाव का अध्ययन किया तथा नियंत्रण अवस्थान व समय प्रबंधन का शैक्षिक उपलब्धि पर सकारात्मक प्रभाव पाया।

4. निष्कर्ष :

उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में उच्च नियंत्रण अवस्थान वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि उच्च होती है तथा निम्न नियंत्रण अवस्थान वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि परस्पर निम्न होती है । इसका कारण विद्यार्थियों में आंतरिक नियंत्रण अवस्थान का पाया जाना है जो किसी भी सफलता एवं असफलता के लिए स्वयं को जिम्मेदार मानता है तथा सफलता हेतु सतत प्रयासरत रहता है।

जिन विद्यार्थियों में आंतरिक नियंत्रण अवस्थान पाया जाता है , वे विद्यार्थी उच्च शैक्षिक उपलब्धि अर्जित करते हैं तथा जीवन में उन्नति प्राप्त करते हैं । आंतरिक नियंत्रण अवस्थान किसी बालक के स्वयं पर विश्वास को प्रोत्साहित करता है एवं निरंतर कार्य करने के लिए प्रेरित करता है।

5. सुझाव :

उपर्युक्त अध्ययन से ज्ञात होता है की उच्च नियंत्रण अवस्थान वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि निम्न नियंत्रण अवस्थान वाले विद्यार्थियों से अधिक होती है । यदि बालक में आंतरिक नियंत्रण अवस्थान हो तो वह अपने कार्यों को ज्यादा अच्छी तरीके से कर पाएगा। इसलिए आवश्यकता है कि विद्यालय स्तर पर बालकों को ऐसे शिक्षा की व्यवस्था कराई जाए जिससे वे स्वयं पर विश्वास बढ़ा सकें एवं प्रत्येक कार्य की जिम्मेदारी स्वयं लें।

किशोरावस्था मनोवैज्ञानिक दृष्टि से अत्यंत ही महत्वपूर्ण काल होता है । यही वह समय होता है जब बालक में नवीन व्यक्तित्व का निर्माण होता है, विद्यालय स्तर पर बालकों को इस प्रकार की शिक्षा की व्यवस्था कराई जानी चाहिए जिससे उनके आंतरिक नियंत्रण अवस्थान का विकास हो तभी इस अध्ययन की सार्थकता दृष्टिगत होगी।

संदर्भ ग्रंथ :

1. Kumar, S. & Chengti, S.K. (2010).The influence of education on locus of control.*Psycho-Lingua, 40th Years of Publication*, 40(1-2), 27 – 29.
2. Rana Ozen Kutanis (2011). Effect of Locus of control on learning performance. A case of an Academic Organisation. *On line Journal*
3. Rauter (1979). Locus of Control in India : A Cross Cultural Perspective, *International Journal of Psychology*, 14(1-4). 207-214
4. Vanja, Y. and Geeta, D. (1017). A study of locus of control and self confidence in high school students. *The International Journal of Research*, Vol 5(7), 598-602